प्रस्तुतकर्ता

सन्तोष कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर – संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी वाराणसी

विषय- संस्कृत

बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर (मेजर)

इकाई –1(/2)

शीर्षक - संस्कृत वांङ्गमय में पारंपरिक ज्ञान विज्ञान-

उपशीर्षक- लौकिक वांङ्गमय मे ज्ञान

स्वघोषणा

(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है।आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

लौकिक वांङ्गमय

वेदों के आख्यानों से रामायण, महाभारत एवं पुराणों की रचना हुई दार्शनिक सूक्तों से दर्शनशास्त्र धर्मसूत्रों से धर्म शास्त्र और अर्थशास्त्र तथा अथर्ववादात्मक शब्दों से काव्य साहित्य का उद्भव हुआ। इसी तरह ऋग्वेद /अथर्ववेद से आयुर्वेद, यजुर्वेद से धनुर्वेद(सैन्य विज्ञान), सामवेद से गंधर्व तथा अथर्ववेद से अर्थशास्त्र एवं शिल्प शास्त्र का विकास हुआ वेदांगों से गणितविज्ञान ,खगोलविज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान, आयुर्विज्ञान, रसायनविज्ञान, भौतिकी, शिल्प विज्ञान आदि का उत्तरवर्ती विकास हुआ विज्ञान के विषयों में वैज्ञानिक चिंतन शामिल है।

विभिन्न कालक्रमों में वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य में भारतीय दर्शन ,भूगोल ,खगोल, गणित, ज्योतिष , वास्तु, योग ,आयुर्वेद, अर्थशास्त्र विज्ञान संगीत का विकास हुआ।सहस्राब्दियों से संस्कृत भाषा और इसके वांङ्गमय को भारत में सर्वाधिक

प्रतिष्ठा प्राप्त रही है वैदिक वांङ्गमय के अनंतर सांस्कृतिक दृष्टि से वाल्मीकि का रामायण तथा व्यास के महाभारत की भारत में सर्वोच्च प्रतिष्ठा मानी गई है ।

वाल्मीकि रामायण आद्य लौकिक महाकाव्य है उसकी गणना आज भी विश्व के उच्चतम काव्य में की जाती है । रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है। इसमें राम-कथा वर्णित है। इसमें सात काण्ड है-बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किन्धाकांड, सुन्दरकांड, युद्धकांड और उत्तरकांड। इसमें लगभग २४ सहस्र श्लोक है, अतः इसे 'चतुर्विंशति-साहस्री संहिता' भी कहते हैं। यह पति-पत्नी के सम्बन्ध, पिता- पुत्र के कर्तव्य, गुरु-शिष्य का पारस्परिक व्यवहार, भाई का भाई के प्रति कर्तव्य, व्यक्ति का समाज के प्रति उत्तरदायित्व, आदर्श पिता-माता-पुत्र-भाई-पति एवं पत्नी का चित्रण, आदर्श गृहस्थ जीवन की अभिव्यक्ति करता है।

लौकिक साहित्य में रामायण के पश्चात महाभारत का ही स्थान हैं। यह कई दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जिसमें तत्कालीन सभी सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि विषयों का समन्वय है। यह एक ओर सुललित पद्यात्मक बन्ध है तो दूसरी ओर आचार-संहिता है। इसमें चतुर्वर्ग के सभी विषय, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष, प्रति- पादित हैं। महाभारत के बृहत् संस्करण में लेखक की महत्त्वाकांक्षा रही है कि उस समय का उल्लेखनीय कोई भी विषय छूट न जाए। इस महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के कारण ही यह 'भारत' से 'महाभारत' हो गया। संस्कृति और सभ्यता का महाभारत में जितना विशुद्ध चित्रण मिलता है, उतना अन्यत्र किसी भी ग्रन्थ में दुर्लभ है। महाभारत का वास्तविक महत्त्व भगवद्गीता के कारण है। गीता करोड़ों लोगों के लिए न केवल आचार-संहिता है, अपितु वेद के समकक्ष एक धर्मग्रन्थ है । आर्यधर्म के सभी भेद-उपभेद गीता की प्रामाणिकता पर नाममात्र भी सन्देह नहीं करते । सत्य तो यह है कि गीता आर्य-धर्म को समन्वित एवं सूत्रबद्ध करने वाली श्रृंखला है। महाभारत एक नहीं, अनेक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें विभिन्न संस्कृतियों का सम्मिश्रण, राष्ट्रीय भावना का उदय, भौगोलिक अनेकता में एकता, जीवन-दर्शन की व्यावहारिक दृष्टि से व्याख्या, अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता, महिलाओं में अबलात्व के परित्याग की प्रवृत्ति, राजनीति कूटनीति छद्मनीति, दण्डनीति और अनीति का व्यावहारिक प्रदर्शन, राजधर्म का

सर्वांगीण निरूपण, आख्यान- साहित्य का अक्षय कोष, नीति-शास्त्र की बहुमूल्य निधि एवं चतुर्वर्ग की सभी समस्याओं का समाधान मिलता है।

रामायण और महाभारत दोनों ही भारतीय संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ हैं। दोनों ने सहस्रों वर्षों से भारतीय जन-जीवन को प्रभावित किया है और आज भी उनका प्रभाव अक्षुण्ण है। एक में आदर्श है तो दूसरे में व्यवहार, एक में धर्म है तो दूसरे में कर्म, एक में सदाचार और नैतिकता है तो दूसरे में राजनीति और कूटनीति, एक में भ्रातृप्रेम का आदर्श है तो दूसरे में भ्रातृ-द्वेष का चरमोत्कर्ष, एक में सदाचार और संयम की प्रमुखता है तो दूसरे में अनैतिकता और अनाचार का प्राबल्य, एक में त्याग का महिमा है तो दूसरे में अर्थ-लोलुपता, एक में सत्यनिष्ठा है तो दूसरे में छल-प्रपंच, एक में देवत्व है तो दूसरे में मनुष्यत्व ।

इसके अतिरिक्त अष्टादश पुराण और उपपुराण आदि का विशाल वांङ्गमय है जिसमें पौराणिक मिथकीय पद्धति से केवल आर्यों का ही नहीं बल्कि भारत की समस्त जनता और जातियों का सांस्कृतिक इतिहास निबद्ध है । पुराण का अर्थ प्राचीन या पुराना है। इसमें प्राचीन कथानक, वंशावली, इतिहास, भूगोल, ज्ञान-विज्ञान आदि सभी प्राचीन तत्त्वों का समावेश है, अतः इसे पुराण नाम दिया गया। पुराणम् आख्यानं पुराणम्, प्राचीन आख्यानों को पुराण कहते हैं।

महाकवि कालिदास की रचनाएं विश्व में श्रेष्ठ मानी जाती हैं। अश्वघोष, भास, भवभूति, बाणभट्ट, दंडी, भारवि ,माघ, श्रीहर्ष शूद्रक, विशाखदत्त आदि कवि एवं नाटक कारों को उच्च स्थान प्राप्त है। महाकवियों ने वेद, व्याकरण, काव्य-शास्त्र, राजनीति, आयुर्वेद, नीति-शास्त्र, संगीत, हस्ति-अश्वादि-विद्याएँ, पाकशास्त्र, ज्योतिष और कामशास्त्र यादि में विशेष व्युत्पत्ति प्राप्त की थी। सैकड़ों श्लोक ऐसे हैं, जिनसे शास्त्रीय पाण्डित्य प्रकट होता है।

इसके अतिरिक्त गीत, कला, संगीत, नृत्य आदि सभी विषयों के ग्रंथों को संस्कृत भाषा के माध्यम से निर्मित किया गया है कौटिल्य के अर्थशास्त्र वात्सायन का कामसूत्र भरतमुनि का नाट्यशास्त्र आदि संस्कृत के अमूल्य ग्रंथ रत्न हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास डॉ कपिल देव द्विवेदी।

2- संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास राधावल्लभ त्रिपाठी।

3- संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास विनय कुमार राय ।

4-रामायण ।

5-महाभारत।

6- श्रीमद्भगवत गीता।